[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3652

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मानव जीवन और विविध रंग

डॉ. वन्दना अग्निहोत्री
विभागाध्यक्ष हिन्दी,
मा.जी.बा.शा.स्ना.कन्या.महा. इन्दौर

रंग न होते तो संसार का रूप कैसा होता कहना कठिन है। रंग प्राणीमात्र को प्रभावित करते है। मनुष्य तो खैर ज्ञान का पुतला है। पषु–पक्षी और कीट पतंगो तक रंगो के प्रति आकर्षित रहते है किन्तु सभी रंग एक जैसा प्रभाव नही डालते। सभी रंग शोभन भी हैं और अप्रिय भी। यह देखने वाले की मनोवृत्ति पर निर्भर हैं कि किसे कौनसा रंग प्रिय लगता है।रंग की कोई परिभाषा नही है। रंग एक बाहरी त्वचा का लेपमात्र है शरीर रचना और पर्यावरण पर यह लेप निर्भर करता है। मनुष्य का गोरा रंग (सफेद, गुलाबी, गंदुमी) होना, काला (सांवला, अत्यधिक काला) होना उनकी शारीरिक रचना और पर्यावरण पर निर्भर करता है। जहां तेज गर्मी होती है वहां लोग काले एवं जहां ठण्डे एवं बर्फीले इलाके होते है वहां लोग गोरे होते है। त्वचा पर भी वातावरण, आबो–हवा और शारीरिक रचना का समुचित प्रभाव पडता है। कुछ जीवों पर आसपास के वातावरण का तत्काल प्रभाव प्रडता है और उनका शरीर उसी क्षण उस वातावरण के अनुकूल हो जाता है जैसे गिरगिट।कुछ लोग एक रंग पसंद करते है तो दूसरों को उससे चिढ़ है परंतु कुछ पषु–पक्षियों में भी रंगो के प्रति यही प्रतिक्रिया देखी जाती है। लाल रंग से जंगली जानवारों के आतंकित होने या भड़कने की बाते प्रसिद्ध है। चिडिया और कीडे मकोडे भी विभिन्न रंगो के प्रति आसक्त और विरक्त देखे जाते है।

रंग की उत्पत्ति कैसे हुईः– इस प्रष्न का उत्तर खोजने से पूर्व हम भारतीय ग्रंथो को देखे तो ज्ञात होगा कि संसार का संपूर्ण ज्ञान उसमें वर्णित है। जब रंग की उत्पत्ति का प्रष्न आता है तब भारतीय देवताओं का मुखडा सामने आ जाता है। सभी का रंग सांवला (राम–कृष्ण) वर्णित है। वही पर विज्ञान इस तथ्य को प्रमाणित कर चुका है कि सभी रंगो की मूल उत्पत्ति काले रंग से हुई है।प्रत्येक रंग की अपनी उष्मा होती है इसी आधार पर रंगीन फोटोग्राफी का जन्म हुआ है। रंगीन फिल्म के लेप कुछ इस प्रकार बने है कि वह प्रत्येक रंग की उष्मा सोख लेते है और जब उनके प्रिन्ट बनते है तो इसी कारण ठीक रंग ठीक स्थान पर आ जाते है। हम स्वयं अनुभव करते है कि जिन रंगीन फिल्मों का लेप ठीक नही होता तब प्रिन्ट बनने पर रंग अस्त व्यस्त या फिर बदरंग हो जाते है। रंगों की इसी उष्मा को ध्यान में रखकर भारतीय धर्म में अनेक विधान और संस्कारों का समावेष कर दिया गया है।हमारे महर्षियों ने यह आष्चर्यजनक विधान बनाया है कि बारह ग्रह, बारह राषियां, बारह कुण्डलियों के घर और मुख्यतः बारह ही रंग माने गए है। ष्रंगो का प्रकाष से संबंध है, प्रकाष का ग्रहों से संबंध है, ग्रहो का रत्न से सीधा संबंध है अतः परोक्ष तथा प्रत्यक्ष रूप में रत्न और रंग का अटूट संबंध है।''लाल रंग वासना, कामुकता को शान्त करता है इसी कारण नव वधु का सारा वेष लाल (लाल जोड़ा) रखा गया है। मांग में सिंदूर, आलता, बिंदी, महावर, माथे पर टीका सब लाल ही लाल। यह सब काम–वासना की उग्रता का शमन करता है। उल्लेखनीय है कि लाल रंग काम–वासना का शासन करता है, दमन नही। पुरूषों के माथे पर भी पूजा के उपरांत लाल रोली का टीका सर्वोत्तम माना गया है। इसी प्रकार दाहिने हॉथ की कलाई में लालं रंग का ष्कलावा' (मौली) बांधते है। पीला रंग शान्ति तथा विनम्रता उत्पन्न करता है। तनाव मुक्त करता है। इसी कारण पीले रंग का विधान पूजा–पाठ में रखा गयाहै। पीले रंग की धोती, पीला कलावा, पीताम्बर वेष इसी आधार पर है। विदा के समय नव वधु को पीले वस्त्र पहनाने की प्रथा है।रंगो के प्रभाव और उष्मा के कारण रंगो के द्वारा उपचार भी किया जाता है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में रंगो द्वारा उपचार करने की विधियां वर्णित है। अब तो पष्चिम के वैज्ञानिक भी इस बात को मान रहे है कि रंगों द्वारा उपचार संभव है। इसे ष्रंगोपचार या कलर' थेरेपी कहते है। रंगो द्वारा कई प्रकार के जटिल रोगों को शान्त किया जा सकता है। इससे अनेक मानसिक रोग ठीक हो जाते है।प्रत्येक रंग का अपना अलग अलग प्रभाव है इसी कारण बारह राषियों के लिए बारह माह और बारह रंगो की व्यवस्था इस प्रकार की गई है।

राशि	स्वामी	रंग	माह
मेष	मंगल	लाल	मार्च–अप्रेल
वृष	शुक्र	चमकता सफेद	अप्रेल–मई
मिथुन	बुध	हरा	मई–जून
कर्क	चन्द्रमा	पीला	जून–जुलाई
सिंह	सूर्य	लाल–गुलाबी	जुलाई–अगस्त
कन्या	बुध	हल्का हरा–फिरोजी	अगस्त–सितंबर

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

तुला	शुक्र	हल्का सफेद	सितंबर–अक्टूबर
वृष्चिक	मंगल	हल्का लाल	अक्टूबर–नवंबर
धनु	बृहस्पति	गहरा पीला	नवंबर–दिसंबर
मकर	शनि	काला	दिसंबर–जनवरी
कुंभ	शनि	हल्का काला	जनवरी–फरवरी
मीन	बृहस्पति	हल्का पीला	फरवरी–मार्च

पष्चिम के वैज्ञानिकों को रंगो का यह चमत्कार तब मालूम पडा जब वह मनुष्य की निद्रा का परीक्षण कर रहे थे नींद में खोये हुए मनुष्यों पर प्रयोग कर रहे थे। जब सोये हुए पुरूषों पर रंगीन प्रकाष डाया गया तो उनकी मनोदषा, शारीरिक स्थिति और स्पप्नों में परिवर्तन होने लगा। कुछ में रंगीन प्रकाष के कारण बैचेनी अनुभव की गई और कुछ में सिरदर्द होने लगा। उठाने पर कुछ लोगो के शरीर में स्फूर्ति फूल सा हल्कापन अनुभव किया गया ष्षभिन्न भिन्न रंगों के प्रकाष में वह भिन्न भिन्न अनुभव प्राप्त करते रहे। इसी निष्कर्ष के कारण रंगो के प्रभाव का अनुसंधान होने लगा। तब निष्कर्ष सामने आया कि प्रत्येक रंग का अपना गुण, अपनी उष्मा होती है। मनुष्य शरीर पर इनका अपना अलग ही प्रभाव होता है।'' इसी सिद्धांत के आधार पर रंगो द्वारा उपचार की विधियां विकसित होती गई। बारह रंगो के अध्ययन के उपरांत उनके मिश्रण पर भी शोध किया गया। प्रमुख बारह रंग इस प्रकार हैः–

(1) लाल, (2) पीला, (3) नीला, (4) गुलाबी, (5) सफेद, (6) हरा, (7) काला, (8) भगवा (नारंगी), (9) बैंगनी, (10) कत्थई, (11) आसमानी फिरोजी, (12) मटमैला या भूरा।

मनुष्य के मानसिक और शरीर रचना पर रंगों का व्यापक प्रभाव पडता है इसका मुख्य कारण यह है कि रंग आंखो पर अपना प्रभाव डालता है और आंखे जो कुछ देखती है उनका मस्तिष्क पर प्रभाव पडता है। मस्तिष्क का प्रभाव शरीर के स्नायुओ और रक्त प्रवाह हो प्रभावित करता है इस कारण रंगों का महत्व वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्णतः प्रमाणित होता है।रत्नों का मुख्य आधार भी रंग ही है। रत्न अपनी चमक, गुणवत्त और उत्तम कट के कारण मूल्यवान हो जाते है यह सब गुण उनका मूल्य तो बताते ही है लेकिन गुण की पहचान उनका रंग ही उत्पन्न करता है। हम रत्न में रंग को प्रमुखता से देखते है और रंग ही लाभ प्रदान करता है। रत्न अनेक रंगों के होते है। उनका रंग प्राकृतिक और शाष्वत होता है। निरापद की बात नही कही जा सकती पर वे अपने रंगों के कारण भिन्न भिन्न प्रभाव डालने वाले अवष्य होते है। कोई रंग, कोई रत्न एक व्यक्ति के लिए लाभ प्रद हो सकता है पर दूसरे को वह हानि भी पहुंचा सकता है। रत्न के रंगों का मानव की प्रकृति शारीरिक संरचना और सौर मंडल स्थित ग्रहीय प्रभाव का गहरा संबंध है। ष्रत्नों का रंग एक प्रकार की विकरणीय व्यवस्था से अनुप्रमाणित रहता है वह अपने अनूकुल ग्रह से आ रही राषियों से समंजन तथा भिन्न वर्षा वाली राषियों से संघर्ष करता है। इस प्रक्रिया का प्रभाव मानव जीवन पर अदृष्य रूप से बडी तीव्रता से होता है।

लाल, पीला, नीला, हरा प्रकृति के प्रमुख रंग है। लाल सृष्टि का मुख्य रंग है वह सबसे शीघ्र आकर्षित करता है। रक्त वर्ण होने से यह अत्यन्त उत्तेजक, गर्म तथा प्रर्वतक है। अग्नि तथा सूर्य की किरणों में भी यह रंग विद्यमान है। इस रंग के द्वारा नीरस, कमजोर तथा दुखी व्यक्ति के जीवन में नई जागृति, नया जोष लाया जा सकता है। लाल रंग ही अधिकता से व्यक्ति में क्रोध की अधिकता देखी जाती है। पीले रंग का सबसे अधिक प्रभाव स्नायुओ पर पडता है। हल्का रंग होने के कारण यह पुण्यषीलता को भी प्रकट करता है। वैसे यह रंग गर्म भी है जिस प्रकार पंचतत्वों में वायु को प्रमुख माना गया है ठीक उसी प्रकार रंगों में नीले रंग को प्रमुख माना गया है। रंगों का मानव जीवन पर गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव प्रडता है। इसलिए मनोचिकित्सक भी रंगों में परिवर्तन करके मरीजों के आचार व्यवहार और विचार को परिवर्तित करने में सफल हुए है। ष्इस विषय में प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. अलबर्ट कॉहन का कहना है कि कई मनोविकार ग्रस्त, तनाव, पीडित तथा असंतुलित व्यक्तियों का उपचार उनके आसपास के रंगो बदल देने मात्र से भी हो सकता है।

प्रकृति में असंख्य रंग विद्यमान है जिन्हे हम प्रतिदिन किसी न किसी रूप में देखते है। यह आवष्यक नही कि प्रत्येक रंग का भिन्न भिन्न नाम हो ये नाम तो मुख्य रंग पर ही आधारित होते है जो कि प्रकृति ने मात्र तीन रंगतो में ही विद्यमान हैः– पीला, हरा तथा लाल। इन रंगों की तरंग व लंबाई अलग अलग होती है। जिसके अनुसार व्यक्ति उनसे कम या अधिक प्रभावित होते है। रंग के द्वारा ही व्यक्तियों के मानस पटल पर तरह तरह के विचार उत्पन्न होते है रहते है क्योंकि विचार और रंग में अत्यधिक घनिष्ट संबंध है। तरंगों का व्यक्ति के जीवन पर बहुत प्रभाव पडता है।भारतीय दर्षन में

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

प्राचीनकाल से ही भिन्न भिन्न रंगो का प्रभाव देखने को मिलता है। इस आधार पर रंग विषेष के प्रभाव से अपने अथवा व्यक्ति के स्वभाव को समझ कर उसे अपनी इच्छानुसार प्रभावित किया जा सकता है। रंगों का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर असाधारण प्रभाव पडता है।

उदाहरण के लिए कुछ व्यक्तियों को लाल रंग के कपडे पहनने से चक्कर सा आने लगता है और उन्हे इस रंग के स्थान अन्य रंग जैसे– सफेद, नीले या हरे रंग के कपडे पहना दिये जाये तो वह सामान्य हो जाते है। रंगों के प्रभाव को वैज्ञानिक इलेक्ट्रानों व विकिरणों की तरंगों का प्रभाव मानते है रंगों की गुणवत्ता के कारण इलेक्ट्रान व रेडियों तरंगों की लंबाई व उनके प्रभाव के अनुरूप ही रंगों का निर्धारण होता है। इससे ही मानसिक का विजुअल कर्टिन्स अर्थात् दृष्टि विषयक बाह्य आवरण पहचाना जाता है तथा वह प्रभावित होता है।

निष्कर्षः– इसी आधार पर आधुनिक व चमकीले तडक भडक वाले रंगो को निषिद्व समझा जाता है ऐसे रंग दृष्टि प्रदूषण के अन्तर्गत हानिकारक होते है इससे व्यक्ति के निषेधात्मक चिंतन को बढावा मिलता है तथा उसमें तनाव व बैचेनी मानसिक अवसाद व मनोविकारों की उत्पत्ति होती है इसलिए रंगों को किसी भी रूप में धारण करते समय उचित रंगों के चयन को प्राथमिकता देनी चाहिये ताकि मन में हमेषा सदविचार ही पनपे क्योंकि रंग ही ऐसा कारक है जिसके द्वारा हमारे विचारों में परिवर्तन होते रहते है।

संदर्भ ग्रंथः–

1 *रत्नों का रहस्यमय संसार– डॉ. भोजराज द्विवेदी*
2 *सूर्य, रंग, रत्न द्वारा चिकित्सा– संकलनकर्ता प्रेम कपाडिया*
3 *प्रात्यक्षिकी सम्पादन– डॉ. विनायक पांडे।*